UNIVERSAL
LIBRARY
OU_178787
UNIVERSAL
LIBRARY

O. P -7?7—25-4-81 -10,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 81 Accession No. PG.H6M2

P96Y

Author पृथ्वीराज

Title वैदिक क्रिस्चन

This book should be returned on or before the date last marked below

वक्तव्य

डिंगल काव्य-परंपरा में महाराजा पृथ्वीराज और उनके द्वारा रचित प्रस्तुत काव्य-ग्रंथ 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' को एक विशेष स्थान प्राप्त है। डिंगल-काव्य-शैली का उत्तर कालीन विकास, उस पर रीति-प्रवृत्तियों का प्रभाव, १७ वीं शती में डिंगल भाषा का स्वरूप, कितने ही विषयों के ज्ञान और अध्ययन की दृष्टि से यह काव्य-कृति बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी दृष्टिकोण से सन् १६३१ में एकेडेमी ने इस ग्रंथ का एक सुसंपादित संस्करण प्रकाशित किया था। अनुवादक महाराज जगमाल सिंह तथा सपादक पं० सूर्यकरण पारीक और ठाकुर रामसिंह ने समस्त उपलब्ध प्रतियों के आधार पर पाठांतरों सहित शुद्ध पाठ निर्धारित किया था। भूमिका, हिंदी अनुवाद, पाठांतर निर्देश, टिप्पणियाँ, शब्दकोष, और समस्त उपलब्ध डिंगल तथा संस्कृत टीकाओं सहित ९१४ पृष्ठों का वह ग्रंथ इतना उपयोगी और महत्वपूर्ण है कि टुची तथा ग्रियर्सन आदि विद्वानों ने उसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

किन्तु कई विश्वविद्यालयों में 'वेलि' पाठ्य-पुस्तक निर्धारित हो गई है अतः विद्यार्थियों की सुविधा के लिए इस ग्रंथ का केवल मूल-पाठ का संस्करण अलग प्रकाशित किया जा रहा है।

धीरेंद्र वर्मा
एम० ए०, डी० लिट्
मंत्री तथा कोषाध्यक्ष

हिंदुस्तानी एकेडेमी,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

दक्खिण दिसि देस विदरभति दीपति पुर दीपति अति कुँदणपुर ।
राजति एक भीखमक राजा सिरहर अहि नर असुर सुर ॥१०॥

पञ्चपुत्र ताइ छठी सुपुत्री कुँअर रुकम कहि विमल़कथ ।
रुकमबाहु अनै रुकमाली रुकमकेस नै रुकमरथ ॥११॥

रामा अवतार नाम ताइ रुषमणि मान सरोवरि मेरुगिरि ।
बाल़कति करि हंस चौ बाल़क कनकवेलि बिहुँ पान किरि ॥१२॥

अनि वरिस वधै ताइ मास वधै ए वधै मास ताइ पहर वधन्ति ।
लखण बत्रीस बाल़लीलामै राजकुँअरि द्रूलड़ी रमन्ति ॥१३॥

संग सखी सील़ कुल़ वेस समाणी पेखि कल़ी पदिमणी परि ।
राजति राजकुँअरि रायअंगण उडीयण वीरज अम्ब हरि ॥१४॥

सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति वेस सन्धि सुहिणा सु वरि ।
हिव पल़ पल़ चढतौ जि होइसै प्रथम ज्ञान एहवी परि ॥१५॥

पहिलौ मुख राग प्रगट थ्यौ प्राची अरुण कि अरुणोद अम्बर ।
पेखे किरि जागिया पयोहर सञ्झा वन्दण रिखेसर ॥१६॥

जम्प जीव नहीं आवतौ जाणे जोवण जावणहार जण ।
बहु विलखी वीछड़ती बाल़ा बाल़ सँघाती बाल़पण ॥१७॥

आगलि पित मात रमन्ती अङ्गणि काम विराम छिपाड़ण काज ।
लाजवती अङ्गि एह लाज विधि लाज करन्ती आवै लाज ॥१८॥

सैसव सु जु सिसिर वितीत थयौ सहु गुण गति मति अति एह गिणि ।
आप तणौ परिग्रह ले आयौ तरुणापौ रितुराउ तिणि ॥ १९ ॥

दल फूलि विमल़ बन नयण कमल़ दल़ कोकिल कण्ठ सुहाइ सर ।
पाँपणि पङ्क सँवारि नवी परि भ्रहाँरे भ्रमिया भ्रमर ॥२०॥

मलयाचल सुतनु मलै मन मौरे कली कि काम अङ्कुर कुच ।
तणौ दखिणदिसि दखिण त्रिगुणमै ऊरध सास समीर उच ॥२१॥

आणँद सु जु उदौ उहास हास अति राजति रद रिखपन्ति रुख ।
नयण कमोदणि दीप नासिका मेन केम राकेस मुख ॥२२॥

वधिया तनि सरवरि वेस वधन्ती जोवण तणौ तणौ जल जोर ।
कामणि करग सु बाण काम रा दोर सु वरुण तणा किरि डोर ॥२३॥

कामिणि कुच कठिन कपोल करी किरि वेस नवी विधि वाणि वखाणि ।
अति स्यामता विराजति ऊपरि जोवण दाण दिखालिया जाणि ॥२४॥

धरधर श्रृंग सधर सुपीन पयोधर घणीं खीण कटि अति सुघट ।
पदमणि नाभि प्रियाग तणी परि त्रिवलि त्रिवेणी स्रोणि तट ॥२५॥

नितम्बणी जङ्घ सु करभ निरूपम रम्भ खम्भ त्रिपरीत रुख ।
जुअलि नालि तसु गरभ जेवही वयणै वाखाणै विदुख ॥२६॥

ऊपरि पदपलव पुनर्भव ओपति त्रिमल कमल दल ऊपरि नीर ।
तेज कि रतन कि तार कि तारा हरिहँस सावक ससिहर हीर ॥२७॥

व्याकरण पुराण समृति सासत्र विधि वेद च्यारि खट अङ्ग विचार ।
जाणि चतुरदस चौसठि जाणी अनँत अनँत तसु मधि अधिकार॥२८॥

साँभलि अनुराग थयो मनि स्यामा वर प्रापति वञ्छती वर ।
हरि गुण भणि ऊपनी जिका हर हर तिणि वन्दे गवरि हर ॥२९॥

ईखे पित मात एरिसा अवयव विमल विचार करै वीवाह ।
सुन्दर सूर सील कुल करि सुध नाह किसन सरि सूझै नाह ॥३०॥

प्रभणन्ति पुत्र इम मात पिता प्रति अम्हाँ वासना वसी इसी ।
ग्याति किसो राजवियाँ ग्वालाँ किसी जाति कुल पाँति किसी ॥३१॥

सुजु करै अहीरां सरिस सगाई ओलांडे राजकुल इता।
त्रिधपणौ मति कोइ वेसासौ पाँतरिया माता इ पिता ॥३२॥

प्रभणै पित मात पूत मत पाँतरि सुर नर नाग करै जसु सेव।
लिखमी समी रुकमणी लाडी वासुदेव सम सुत वसुदेव ॥३३॥

मावीत्र म्रजाद मेटि बोलै मुखि सुवर न को सिसुपाल सरि।
अति अँबु कोपि कुँवर ऊफणियौ वरसालू वाहला वरि ॥३४॥

गुरु गेहि गयौ गुरु चूक जाणि गुरु नाम लियौ दमघोख नर।
हेक वडौ हित हुवै पुरोहित वरै सुसा सिसुपाल वर ॥३५॥

विप्र विलँब न कीध जेणि आइस वसि बात विचारि न भली बुरी।
पहिलुँ इ जाइ लगन ले पुहतौ प्रोहित चन्देवरी पुरी ॥३६॥

हुइ हरख घणौ सिसुपाल हालियौ ग्रंथे गायौ जेणि गति।
कुण जाणै सँगि हुआ कंतला देस देस चा देसपति ॥३७॥

आगमि सिसुपाल मण्डिजै ऊछव नीसाणे पड़ती निहस।
पटमण्डप छाइजै कुंदणपुरि कुन्दणमै बाझै कलस ॥ ३८ ॥

ग्रिह ग्रिह प्रति भींति सुगारि हींगलू ईंट फिटकमै चुणी अचम्भ।
चन्दन पाट कपाट ई चन्दण खुम्भी पनाँ प्रवाली खम्भ ॥३९॥

जोइ जलद पटल दल साँवल ऊजल घुरै नीसाण सोइ घणघोर।
प्रोलि प्रोलि तोरण परठीजै मण्डै किरि तण्डव गिरि मोर ॥४०॥

राजान जान सँगि हुंता जु राजा कहै सु दीध ललाटि कर।
दूरा नयर कि कोरण दीसै धवलागिरि किना धवलहर ॥४१॥

गावै करि मङ्गल चढ़ि चढ़ि गौखै मनै सूर सिसुपाल मुख।
पदमिणि अनि फूलै परि पदमिणि रुखमिणी कमोदणी रुख ॥४२॥

जाळी मगि चढ़ि चढ़ि पन्थी जोवै भुवणि सुतन मन तसु भिळित ।
लिखि राखे कागळ नख लेखणि मसि काजळ आँसू मिळित ॥४३॥

तितरै हेक दीठ पवित्र गळित्रागौ करि प्रणपति लागी कहण ।
देहि सँदेस लगी दुवारिका वीर वटाऊ ब्राह्मण ॥४४॥

म म करिसि ढील हिव हुए हेकमन जाइ जादवाँ इन्द्र जत्र ।
माहरै मुख हुँता ताहरै मुखि पग वन्दण करि देइ पत्र ॥४५॥

गई रवि किरण ग्रहे थई गहमह रहरह कोइ वह रहे रह ।
सु जु दुज पुरा नीसरे सूतौ निसा पड़ी चालियौ नह ॥४६॥

दिन लगन सु नैड़ो दूरि द्वारिका भौ पहुचेस्याँ किसी भति ।
साँझ सोचि कुन्दणपुरि सूतौ जागियौ परभाते जगति ॥४७॥

धुनि वेद सुणति कहुँ सुणति संख धुनि नद झल्लरि नीसाण नद ।
हेका कह हेका हीलोहल सायर नयर सरीख सद ॥४८॥

पणिहारि पटळ दळ वरण चंपक दळ कळस सीस करि कर कमळ ।
तीरथि तीरथि जङ्गम तीरथ विमळ ब्राह्मण जल विमळ ॥४९॥

जोवै जाँ गृहि गृहि जगन जागवै जगनि जगनि कीजै तप जाप ।
मारगि मारगि अम्ब मौरिया अम्बि अम्बि कोकिल आलाप ॥५०॥

सम्प्रति ए किना किना ए सुहिणौ आयौ कि हूँ अमरावती ।
जाइ पूछियौ तिणि इभि जम्पियौ देव सु आ दुआरामती ॥५१॥

सुणि स्रवणि वयण मन माहि थियौ सुख क्रमियौ तासु प्रणाम करि ।
पूछत पूछत ग्यौ अन्तहपुरि हुऔ सुदरसण तणौ हरि ॥५२॥

वदनारविन्द गोविन्द वीखियै आलोचै आपों आप सूँ ।
हिव रुषमणी कृतारथ हूइस्यै हूऔ कृतारथ पहिलौ हूँ ॥५३॥

ऊठिया जगतपति अन्तरजामी दूरन्तरी आवतौ देखि ।
करि वन्दण आतिथ ध्रम कीधो वेदे कहियौ तेणि विसेखि ॥५४॥

कस्मात् कस्मिन् किल मित्र किमर्थं केन कार्ये परियासि कुत्र ।
ब्रूहि जनेन येन भो ब्राह्मण पुरतो मे प्रेषितम् पत्र ॥५५॥

कुन्दणपुर हुँता वसाँ कुन्दणपुरि कागल़ दीधो एम कहि ।
राज लगैं मेल्हियौ रुषमणी समाचार इणि माहि सहि ॥५६॥

आणन्द लखण रोमाञ्चित आँसू वाचत गदगद कँठ न वणै ।
कागल़ करि दीधौ करुणाकरि तिणि तिणि हीज ब्राहमण तणै ॥५७॥

देवाधिदेव चै लाधै दूवै वाचण लागौ ब्राहमण ।
विधि पूरबक कहे वीनवियौ सरण तूझ असरण सरण ॥५८॥

बलिबन्धण मूझ स्याल सिङ्घ बलि प्रासै जो बीजौ परणै ।
कपिल़ धेनु दिन पात्र कसाई तुल़सी करि चाण्डाल़ तणै ॥५९॥

अम्ह कजि तुम्ह छण्डि अवर वर आणै ऐठित किरि होमै अगनि ।
साल़िगराम सूद्र ग्रहि संग्रहि वेद मंत्र म्लेच्छाँ वदनि ॥६०॥

हरि हुए वराह हए हरिणाकस हूँ ऊधरी पताल़ हूँ ।
कहौ तई करुणामै केसव सीख दीध किण तुम्हाँ सूँ ॥ ६१ ॥

आणे सुर असुर नाग नेत्रै नहि राखियौ जई मंदर रई ।
महण मथे मूँ लीध महमहण तुम्हाँ किणै सीखव्या तई ॥ ६२ ॥

रामा अवतारि वहे रणि रावण किसी सीख करुणाकरण ।
हूँ ऊधरी त्रिकुटगढ़ हूँती हरि बन्धे वेल़ाहरण ॥ ६३ ॥

चौथीआ वार वाहरं करि चत्रभुजा सङ्ख चक्र धर गदा सरोज ।
मुख करि किसूँ कहीजै माहव अन्तरजामी सूँ आलोज ॥ ६४ ॥

तथापि रहे नहूँ सकूँ ब कूँ तिणि त्रिया अनै प्रेम आतुरी।
राज दूरि द्वारिका विराजै दिन नेड़उ आइयौ दुरी ॥ ६५ ॥

त्रिणि दीह लगन वेला आड़ा तै घणूँ किसूँ कहिजै आ घात।
पूजा मिसि आविसि पुरखोतम अम्बिकालय नयर आरात ॥ ६६ ॥

सारङ्ग सिलीमुख साथि सारथी प्रोहित जाणणहार पथ।
कागल चौ ततकाल कृपानिधि रथ बैठा साँभलि अरथ ॥ ६७ ॥

सुग्रीवसेन नै मेघपुहप सम वेग बलाहक इसै वहन्ति।
खँति लागौ त्रिभुवनपति खेड़ै धर गिरि पुर साम्हा धावन्ति ॥ ६८ ॥

रथ थम्भि सारथी विप्र छण्डि रथ औ पुर हरि बोलिया इम।
आयौ कहि कहि नाम अम्हीणौ जा सुख दे स्यामा नै जिम ॥ ६९ ॥

रहिया हरि सही जाणियौ रुषमणि कीध न इवड़ी ढील कई।
चिन्तातुर चित इम चिन्तवती थई छींक तिम धीर थई ॥ ७० ॥

चलपत्र पत्र थियौ दुज देखे चित सकै न रहति न पूछि सकन्ति।
औ आवै जिम जिम आसन्नौ तिम तिम मुख धारणा तकन्ति ॥७१॥

सँगि सन्ति सखीजण गुरुजण स्यामा मनसि विचारि ए कही महन्ति।
कुससथली हूँता कुन्दणपुरि किसन पधार्या लोक कहन्ति ॥ ७२ ॥

बम्भण मिसि वन्दै हेतु सु बीजौ कही स्रवणि सम्भली कथ।
लिखमी आप नमे पाइ लागी अचरिज को लाधै अरथ ॥ ७३ ॥

चढिया हरि सुणि सङ्करखण चढिया कटकबन्ध नह घणा किध।
एक उजाथर कलहि एहवा साथी सहु आखाढसिध ॥ ७४ ॥

पिण पन्थ वीर जूजुआ पधार्या पुरि भेला मिलि कियौ प्रवेस।
जण दूजण सहि लागा जोवण नर नारी नागरिक नरेस ॥ ७५ ॥

कामिणि कहि काम काल कहि केन्नी नारायण कहि अवर नर ।
वेदारथ इम कहै वेदवँत जोग तत्त जोगेसवर ॥ ७६ ॥

वसुदेव कुमार तणौ मुख वीखे पुणै सुणै जण आपपर ।
औ रुषमणी तणौ वर आयौ हर म करौ अनि रायहर ॥ ७७ ॥

आवासि उतारि जोड़ि कर ऊभा जण जण आगै जणौ जणौ ।
राम किसन आया राजा रै तो को अचिरज मनुहार तणौ ॥ ७८ ॥

सीखावि सखी राखी आखै सुजि राणी पूछै रुषमणी ।
आज कहौ तो आप जाइ आवँ अम्ब जात्र अम्बिका तणी ॥ ७९ ॥

राणी तदि दूवौ दीध रुषमणी पति सुत पूछि पूछि परिवार ।
पूजा व्याज काज प्री परसण स्यामा आरँभिया सिणगार ॥ ८० ॥

कुमकुमै मँजण करि धौत वसत धरि चिहुरे जल लागौ चुवण ।
छीणे जाणि छछोहा छूटा गुण मोती मखतूल गुण ॥ ८१ ॥

लागी बिहुँ करे धूपणै लीधै केस पास मुगता करण ।
मन मृग चै कारणै मदन ची वागुरि जाणे विसतरण ॥ ८२ ॥

बाजोटा ऊतरि गादी बैठी राजकुँअरि स्रिँगार रस ।
इतरै एक आली ले आवी आनन आगलि आदरस ॥ ८३ ॥

कंठ पोत कपोत कि कहुँ नीलकँठ वडगिरि कालिन्द्री वली ।
समै भागि किरि सङ्ख सङ्खधर एकणि ग्रहियौ अङ्गुली ॥ ८४ ॥

कबरी किरि गुन्थित कुसुम करम्बित जमुण फेण पावन्न जग ।
उतमंग किरि अम्बर आधो अधि माँग समारि कुंआर मग ॥८५॥

अणियाला नयण बाण अणियाला सजि कुण्डल खुरसाण सिरि ।
वले बाढ दे सिली सिली वरि काजल जल वालियौ किरि ॥ ८६ ॥

कमनीय करे कूँ कूँ चौ निज करि कलँक धूम काढे बे काट।
सम्प्रति कियौ आप मुख स्यामा नेत्र तिलक हर तिलक निलाट ॥८७॥

मुख सिख सँधि तिलक रतनमै मंडित गयौ जु हूँतौ पूठि गलि।
आयै क्रिसन मांग मग आयौ भाग कि जाणे भालियलि ॥ ८८ ॥

जूँ सहरी भ्रूह नयण मृग जूता विसहर रासि कि अलक वक्र।
वाली किरि वाँकिया विराजै चंद रथी ताटंक चक्र ॥ ८९ ॥

इभ कुँभ अन्धारी कुच सु कञ्चुकी कवच सम्भु काम क कलह।
मनु हरि आगमि मंडे मंडप बन्धण दोध कि वारगह ॥ ९० ॥

हरिणाखी कंठ अंतरिख हूँती बिम्ब रूप प्रगटी बहिरि।
कल मोतियाँ सुसरि हरि कीरति कंठसरी सरसती किरि ॥ ९१ ॥

बाजूबँध बन्धे गोर बाहु बिहुँ स्याम पाट सोहन्त सिरी।
मणिमै हींडि हींडलै मणिधर किरि साखा श्रीखंड की ॥ ९२ ॥

गजरा नवग्रही प्रोंचिया प्रोंचे वलै वलै विधि विधि वलित।
हसत नखित्र वेधियौ हिमकरि अरध कमल अलि आवरित ॥ ९३ ॥

आरोपित हार घणौ थियौ अँतर उरस्थल कुम्भस्थल आज।
सु जु मोती लहि न लहै सोभा रज तिणि सिर नाँखै गजराज॥९४॥

धरिया सु उतारे नव तन धारे कवि तै वाखाणण किमत्र।
भूखण पुहप पयोहर फल भति वेलि गात्र तौ पत्र वसत्र ॥ ९५ ॥

स्यामा कटि कटिमेखला समरपित क्रिसा अँग मापित करल।
भावी सूचक थिया कि भेला सिङ्घरासि ग्रहगण सकल ॥ ९६ ॥

चरणे चामीकर तणा चंदाणणि सज नूपुर घूघरा सजि।
पीला भमर किया पहराइत कमल तणा मकरन्द कजि ॥ ९७ ॥

दधि वीणि लियौ जाइ वणतौ दीठौ साखियात गुणमै ससत।
नासा अग्रि मुताहल निहसति भजति कि सुक मुख भागवत ॥ ९८ ॥

मकरन्द तँबोल कोकनद मुख मझि दन्त किञ्जलक दुति दीपन्ति।
करि इक बीड़ौ वल वाम करि कीर सु तसु जाती क्रीड़न्ति ॥ ९९ ॥

सिणगार करे मन कीधौ स्यामा देवि तणा देहरा दिसि।
होड छण्डि चरणे लागा हँस मोती लगि पाणही मिसि ॥१००॥

अन्तर नीलम्बर अबल आभरण अंगि अंगि नग नग उदित।
जाणे सदनि सदनि सञ्जोई मदन दीपमाला मुदित ॥ १०१ ॥

किहि करगि कुमकुमौ कुङ्कुम किहि करि किहि करि कुसुम कपूर करि।
किहिकरिपान अरगजौ किहि करि धूप सखी किहि करगि धरि ॥१०२॥

चकडोल लगै इणि भाँति सुँ चाली मति तै वाखाणण न मूँ।
सखी समूह माँहि इम स्यामा सील आवरित लाज सूँ ॥ १०३ ॥

आइस्यै जाइ साथि सु चढ़ि चढ़ि आया तुरी लाग ले ताकि तिम।
सिलह माँहि गरकाब सँपेखी जोध मुकुर प्रतिबिम्ब जिम ॥ १०४ ॥

पदमिणि रखपाल पाइदल पाइक हिलवलिया हलिया हसति।
गमे गमे मदगलित गुड़न्ता गात्र गिरोवर नाग गति ॥ १०५ ॥

अस वेगि वहै रथ वहै अन्तरिख चालिया चंदाणणि मग चाहि।
किरि वैकुण्ठ अयोध्यावासी मंजण करि सरयू नदि माँहि ॥ १०६ ॥

पारस प्रासाद सेन सम्पेखे जाणि मयंक कि जलहरी।
मेरु पाखती नखित्र माला ध्रू माला संकर धरी ॥ १०७ ॥

देवालै पैसि अम्बिका दरसे घणै भाव हित प्रीति घणी।
हाथे पूजि कियौ हाथालगि मन वाञ्छित फल रुषमणी ॥ १०८ ॥

आकरषण वसीकरण उनमादक परठि द्रविण सोखण सर पंच ।
चितवणि हसणि लसणि गति सँकुचणि सुन्दरी द्वारि नेहरा संच ॥१०९॥

मन पंगु थियौ सहु सेन मूरछित तह नह रही संपेखतै ।
किरि नीपायौ तदि निकुटी ए मठ पूतली पाखाणमै ॥ ११० ॥

आयौ अस खेड़ि अरि सेन अंतरै प्रथिमी गति आकास पथ ।
त्रिभुवन नाथ तणौ वेला तिणि रव संभली कि दीठ रथ ॥ १११ ॥

बलिबंध समरथि रथ ते बैसारी स्यामा कर साहे सु करि ।
बाहर रे वाहर कोइ छै वर हरि हरिणाखी जाइ हरि ॥ ११२ ॥

सम्भलत धवल सर साहुलि सम्भलि आल दा ठाकुर अलल ।
पिंड बहुरूप कि भेख पालटे केसरिया ठाहे क्रिगल ॥ ११३ ॥

लागेवरि अस चित्राम कि लिखिया निहपरता नरवरै नर ।
माँखण चोरी न हुवै माहव महियारी न हुवै महर ॥ ११४ ॥

ऊपड़ी रजी मझि अरक एहवौ वातचक्र सिरि पत्र वसन्ति ।
सद नीहस नीसाण न सुणिजै वरहासाँ नासाँ वाजन्ति ॥ ११५ ॥

अलगी ही नैड़ो की ऊखवते देठालो हुओ दलाँ दुँह ।
वागाँ ढेरवियाँ वाहरुए मारकुए फेरिया मुँह ॥ ११६ ॥

युद्ध-वर्षा-रूपक-वर्णन

कठठी बे घटा करे कालाहणि समुहे आमहो सामुहै ।
जोगिणि आवी आडँग जाणे वरसै रत बेपूड़ी वहै ॥ ११७॥

हथनालि हवाई कुहक बाण हुवि होइ वीरहक गैगहण ।
सिलहाँ ऊपरि लाह लोह सर मेह बूँद माहे महण ॥ ११८ ॥

कलकलिया कुन्त किरण कलि ऊकलि वरजित विसिख विवरजित वाउ।
धड़ि धड़ि धबकि धार धारूजल सिहरि सिहरि समखै सिलाउ ॥ १९॥

कांपिया उर कायराँ असुभकारियौ गाजंते नीसाणे गड़ड़ै ।
ऊजलियाँ धाराँ ऊवड़ियौ परनाले जल रुहिर पड़ै ।। १२०।।

चोटियाली कूदै चौसठि चाचरि ध्रू ढलियै ऊकसै धड़ ।
अनंत अनै सिसुपाल औभड़ै भड़ मातौ माँडियौ भड़ ।। १२१ ।।

रिण अंगणि तेणि रुहिर रलतलिया घणा हाथ हूँ पड़ै घणा ।
ऊँधा पत्र बुदबुद जल आकृति तरि चालै जोगिणी तणा ।। १२२ ।।

बेली तदि वलभद्र बापूकारे म्त्र सावतौ अजे लगि साथ ।
वूठै वाहविये आ वेला हल जीपिस्यै जु वाहिस्यइ हाथ ।। १२३ ।।

विसरियाँ विसर जस बीज बीजिजै खारी हालाँहलाँ खलाँह ।।
त्रूटै कन्ध मूल जड़ त्रूटै हलधर काँ वाहताँ हलाँह ।।१२४।।

घटि घटि घण घाउ घाइ घाइ रत घण ऊँच छिछ ऊछलै अति ।
पिड़ि नीपनौ कि खेत्र प्रवाली सिरा हंस नीसरै सति ।। १२५ ।।

वलदेव महाबल तासु भुजाबलि पिड़ि पहरन्तै नवी परि ।
बिजड़ां मुहे बेड़ते बलभद्र सिराँ पुंज कीधा समरि ।। १२६ ।।

रिण गाहटतै राम खलाँ रिण थिर निज चरण स मेढ़ि थिया ।
फिरि चड़ियै संघार फेरता केकाणाँ पाइ सुगह किया ।। १२७ ।।

कण एक लिया किया एक कण कण भर खञ्चे भंजियौ भिड़ ।
बलभद्र ग्वलै खलाँ सिर बैठी चारौ पल ग्रीधणी चिड़ ।। १२८ ।।

सरिखाँ सूँ वलभद्र लोह साहियै वड़फरि उछजतै विरुधि ।
भलाभली सति तोईज भंजिया जरासेन सिसुपाल जुधि ।। १२९ ।।

आडो अड़ि एकाएक आपड़े वाग्यो एक रुपमणी वीर ।
अबला लेइ घणी भुँइ आयौ आयौ हूँ पग माँडि अहीर ।। १३० ।।

विलकुलियौ वदन जेम वाकार्यौ सङ्ग्रहि धनुख पुणच सर सन्धि ।
क्रिसन रुकम आउध छेदण कजि वेलखि अणी मूठि द्रिठि बन्धि ॥१३१॥

रुकमइयौ पेखि तपत आरणि रणि पेखि रुपमणी जल प्रसन ।
तणु लोहार वाम कर निय तणु माहव किउ सांडसी मन ॥ १३२ ॥

सगपण ची सनस रुषमणी सन्निधि अण मारिवा तणौ आलोजि ।
ए अखियात जु आउधि आउध सजै रुकम हरि छेदै सोजि ॥ १३३ ॥

निराउध कियौ तदि सोनानामी केस उतारि विरूप कियौ ।
छिणियै जीवि जु जीव छण्डियौ हरि हरिणाखी पेखि हियौ ॥१३४॥

अनुज ए उचित अग्रज इम आखै दुसट सासना भली दई ।
बहिनि जासु पासै बैसारी भलौ काम किउ भला भई ॥ १३५॥

सुसमित सुनमित निज वदन सुव्रीड़ित पुँडरीकाख थिया प्रसन ।
प्रथम अग्रज आदेस पालिवा मिरिगाखी राखिवा मन ॥ १३६ ॥

कृत करण अकरण अन्नथा करणं सगलै ही थोके ससमत्थ ।
हा लिया जाइ लगाया हूँता हरि सालै सिरि थापे हत्थ ॥ १३७ ॥

परदल पिण जीपि पदमणी परणे आणँद उभै हुआ एकार ।
वह तै कटकि माहि वादोवदि वाधण लागा वधाइहार ॥ १३८ ॥

ग्रिह काज भूलिग्या गृहि गृहि गृहगति पूछीजै चिन्ता पड़ी ।
मन अरपण कीधै हरि मारग चाहै प्रज ओटे चड़ी ॥ १३९ ॥

देखताँ पथिक उतामला दीठा झाँखाणा उरि उठी झल ।
नील डाल करि देखि नीलाणा कुससथली वासी कमल ॥ १४० ॥

सुणि आगम नगर सहू साऊजम रुषमिणि कृसन वधावण रेसि ।
लहरिउँ लिये जाणि लहरीरव राका दिन दरसण राकेसि ॥ १४१ ॥

वधाउआँ गृहे गृहे पुरवासी दलिद्र तणौ दीधौ दलिद्र।
ऊछव हुआ अखित ऊछलिया हरी द्रोब केसर हलिद्र ॥ १४२ ॥

नर मारगि एक एक मगि नारी ऊभिया अति उछाह करेउ।
अङ्कमाल हरि नयर आपिवा बाहाँ तिकरि पसारी बेउ ॥ १४३ ॥

वीजलि दुति दँड मोतिए वरिखा झालरिए लागा झड़ण।
छत्रे आकास एम औछायौ घण आयौ किरि वरण घण ॥ १४४ ॥

मुकरमै प्रोलि प्रोलिमै मारग मारग सुरँग अबीरमई।
पुरि हरि सेन एम पैसार्यौ नीरोवरि प्रवसन्ति नई ॥ १४५ ॥

धवलहरे धवल दियै जस धवलित धण नागर देखे सधण।
सकुसल सबल सदल सिरि सामल पुहप बूँद लागी पडण ॥१४६॥

जीपे सिसुपाल जरासिँधु जीपे आयौ गृहि आरती उतारि।
देखे मुख वसुदेव देवकी वार वार वारै पै वारि ॥ १४७ ॥

विधि सहित वधावे वाजित्र वावे भिन भिन अभिन बाणि मुख भाखि।
करै भगति राजान क्रिसन ची राजरमणि रुपमिणि गृह राखि ॥१४८॥

दैवग्य तेड़ि वसुदेव देवकी पहिलौ ई पूछै प्रसन।
दियौ लगन जोतिख ग्रँथ देखे कइ परणै रुपमणी क्रिसन ॥१४९॥

वेदोगत धरम विचारि वेदविद कम्पित चित लागा कहण।
हेकणि सुत्री सरिस किम होवै पुनह पुनह पाणिग्रहण ॥ १५०॥

निरखे ततकाल त्रिकाल निदरसी करि निरणै लागा कहण।
सगल दोख विवरजित साहौ हूँतौ जई हूओ हरण ॥ १५१ ॥

वसुदेव देवकी सूँ ब्राहमणे कही परसपर एम कहि।
हुए हरण हथलेवौ हूओ सेस संसकार हुवइ सहि ॥ १५२ ॥

विप्र मूरति वेद रतनमै वेदी वंस आद्र अरजुनमै वेह ।
अरणी अगनि अगरमै इन्धण आहुति घृत घणसार अछेह ॥१५३॥

पच्छिम दिसि पूठ पूरब मुख परठित परठित ऊपरि आतपत्र ।
मधुपर्कादि सँसकार मंडित त्री वर बे बैसाणि तत्र ॥ १५४ ॥

आरोपित आँखि सहू हरि आननि गरभ उदधि ससि मछे गृहीत ।
चाहै मुख अंगणि ओटे चढि गावै मुखि मंगल करि गीत ॥ १५५ ॥

आगलै प्रिया प्रो चौथै आरँभि फेरा त्रिण्हि इण भांति फिरि ।
कर सांगुष्ट ग्रहण कर सूँ करि करी कमल चम्पियौ किरि ॥१५६॥

पधरावि त्रिया वामै प्रभणावे वाच परसपर यथा विधि ।
लाधी वेला माँगी लाधी निगम पाठके नवे निधि ॥ १५७ ॥

दूलह हुइ आगै पाछै दुलहणि दीन्हा क्रम सूणहर दिसि ।
छँडि चौरी हथलेवै छूटै मन बन्धे अञ्चला मिसि ॥ १५८ ॥

आगै जाइ आलि केलि गृह अन्तरि करि अंगण मारजण करेण ।
सेज वियाज खीर सागर सजि फूल वियाज सजे तसु फेण ॥ १५९ ॥

आभा चित्र रचित तेणि रँगि अनि अनि मणि दीपक करि सूध मणि ।
माँडि रहे चन्द्रवा तणै मिसि फण सहसेई सहस फणि ॥ १६० ॥

मँदिरन्तरि किया खिणन्तरि मिलिवा विचित्रे सखिए समावृत ।
कीधै तिणि वीवाह संसक्रित करण सु तणु रति संसकृत ॥ १६१ ॥

संकुड़ित समसमा सन्ध्या समयै रति वञ्छति रुषमणि रमणि ।
पथिक वधू द्रिठि पंख पंखियाँ कमल पत्र सूरिज किरणि ॥ १६२ ॥

पति अति आतुर त्रिया मुख पेखण निसा तणौ मुख दीठ निठ ।
चन्द्र किरणि कुलटा सु निसाचर द्रवडित अभिसारिका द्रिठ॥१६३॥

अनि पँखि बन्धे चक्रवाक असन्धे निसि सन्धे इमि अहो निसि ।
कामिणि कामि तणी कामागनि मन लाया दीपकाँ मिसि ॥ १६४ ॥

ऊभी सहु सखिए प्रसंसिता अति क्रितारथी प्री मिलण कृत ।
अटत सेज द्वार विचि आहुटि स्तुति दे हरि घरि समाश्रित ॥१६५॥

हँसा गति तणौ आतुर ध्या हरि सूँ वाधाऊआ जेही वहे ।
सूँधावास अनै नेउर सद क्रमि आगै आगमन कहे ॥ १६६ ॥

अवलंबि सखी कर पगि पगि ऊभी रहती मद वहती रमणि ।
लाज लोह लंगरे लगाए गय जिम आणी गयगमणि ॥ १६७ ॥

देहली धसति हरि जेहड़ि दीठी आणँद को ऊपनौ अमाप ।
तिण आपही कियौ आदर ऊभा करि रोमांसूँ आप ॥ १६८ ॥

वहि मिली घड़ी जाइ घणा वाँछता घण दीहाँ अन्तरै घरि ।
अंकमाल आपे हरि आपणि पधरावी त्री सेज परि ॥ १६९ ॥

अति प्रेरित रूप आँखियाँ अत्रिपत माहव जद्यपि त्रिपत मन ।
वार वार तिम करै विलोकन धण मुख जेही रंक धन ॥ १७० ॥

आजाति जाति पट घूँघट अन्तरि मेलण एक करण अमिली ।
मन दम्पती कटाछि दूति मै निय मन सूत्र कटाछि नली ॥ १७१ ॥

वर नारि नेत्र निज वदन विलासा जाणियौ अँतहकरण जई ।
हसि हसि भ्रूहे हेक हेक हुइ गृह बाहरि सहचरी गई ॥ १७२ ॥

एकन्त उचित क्रीड़ा चौ आरँभ दीठौ सु न किहि देव दुजि ।
अदिठ अश्रुत किम कहणौ आवै सुख ते जाणणहार सुजि ॥ १७३ ॥

पति पवन प्रारथित त्री तत्र निपतित सुरत अन्त केहवी श्री ।
गजेन्द्र क्रीडता सु विगलित गति नीरासइ परि कमलिनी ॥ १७४ ॥

कीधै मधि माणिक हीरा कुन्दण मिलिया कारीगर मयण।
स्यामा तणौ लिलाट सोहिया कुंकुम विन्दु प्रसेद कण ॥ १७५ ॥

त्री वदन पीतना चित व्याकुलता हियै धगधगी खेद हुह।
धरि चख लाज पगे नेउर धुनि करे निवारण कंठ कुह ॥ १७६ ॥

तिणि तालि सखी गलि स्यामा तेही मिली भमर भारा जु महि।
वलि ऊभी थई घणा घाति वल लता केलि अवलंब लहि ॥१७७॥

पुनरपि पधरावी कन्है प्राणपति सहित लाज भय प्रीति सा।
मुगत केस त्रूटी मुगतावलि कस छूटी छुद्र घंटिका ॥ १७८ ॥

सुख लाधै केलि स्याम स्यामा सँगि सखिए मनरखिए सँघट।
चौकि चौकि ऊपरि चित्रसाली हुइ रहियौ कहकहाहट ॥ १७९ ॥

राता तत चिन्तारत चिन्तारत गिरि कन्दरि घरि बिन्हे गण।
निद्रावस जग एहु महानिसि जामिए कामिए जागरण ॥ १८० ॥

लिखमीवर हरख निगरभर लागी आयु रयणि त्रूटन्ति इम।
क्रीड़ाप्रिय पोकार किरीटा जीवितप्रिय घड़ियाल जिम ॥ १८१ ॥

(प्रभात वर्णन)

गत प्रभा थियौ ससि रयणि गलन्ती वर मन्दा सइ वदन वरि।
दीपक परजलतौ इ न दीपै नासफरिम सू रतनि नरि ॥ १८२ ॥

मेली तदि साध सुरमण कोक मनि रमण कोक मनि साध रही।
फूले छंडी वास प्रफूले ग्रहणे सीतलता इ ग्रही ॥ १८३ ॥

धुनि उठी अनाहत संख भेरि धुनि अरुणोदय थियौ जोग अभ्यास।
माया पटल निसामै मंजे प्राणायामे ज्योति प्रकास ॥ १८४ ॥

संयोगिणि चीर रई कैरव श्री घर हट ताल़ भमर गोघोख।
दिणयर ऊगि एतला दीधा मोखियाँ बंध बंधियाँ मोख ॥ १८५ ॥

वाणिजाँ वधू गो वाछ अमइ विट चोर चकव विप्र तीरथ वेल़।
सूर प्रगटि एतला समपिया मिलियाँ विरह विरहियाँ मेल़ ॥ १८६ ॥

ॠतु-वर्णन

(ग्रीष्म)

नदि दीह वधे सर नीर घटे निसि गाढ़ धरा द्रव हेमगिरि
सुतरु छांह तदि दीध जगत सिरि सूर राह किय जगत सिरि ॥१८७॥

आकुल़ थ्या लोक केहवो अचिरज वंछित छाया ए विहित
सरण हेम दिसि लीधौ सूरिज सूरिज ही त्रिख आसरित ॥ १८८ ॥

श्रीखंड पंक कुमकुमौ सलिल सरि दलि़ मुगता आहरण दुति।
जल़ क्रीड़ा क्रीड़न्ति जगतपति जेठ मासि एही जुगति ॥ १८९ ॥

मिलि़ माह तणी माहुटि सूँ मस्ति त्रन तपि आसाढ तणौ तपन।
जन त्रीजन पणि अधिक जाणियौ मध्यरात्रि प्रति मध्याह्न ॥१९०॥

नैरन्ति प्रसरि निरधण गिरि नीझर धणी भजै धण पयोधर।
झोल़े वाइ किया तरु झंखर लवली़ दहन कि लू लहर ॥ १९१ ॥

कसतूरी गारि कपूर ईंट करि नवै विहाणै नवी पारि।
कुसुम कमल़ दल़ माल़ अलंक्रित हरि क्रीड़ै तिणि धवल़हरि ॥१९२॥

ऊपड़ी धुड़ी रवि लागी अम्बरि खेतिए ऊजम भरिया खाद्र।
मृगशिर वाजि किया किंकर मृग आद्रा वरसि कीध धर आर्द्र ॥१९३॥

(वर्षा)

बग रिखि राजान सु पावसि बैठा सुर सूता थिउ मोर सर ।
चातक रटै बलाहकि चंचल हरि सिणगारै अम्बहर ॥ १९४ ॥

काली करि काँठलि ऊजल कोरण धारे श्रावण धरहरिया ।
गलि चालिया दिसो दिसि जलप्रभ थंभि न विरहिण नयण थिया ॥१९५॥

वरसतै दड़ड़ नड़ अनड़ वाजिया सघण गाजियौ गुहिर सदि ।
जलनिधि ही सामाइ नहीं जल जलबाला न समाइ जलदि ॥१९६॥

निहसे वूठो घण विणु नीलाणी वसुधा थलि थलि जल वसइ ।
प्रथम समागम वसत्र पदमणी लीधे किरि ग्रहणा लसइ ॥ १९७ ॥

तरु लता पल्लवित तृणे अंकुरित नीलाणी नीलम्बर न्याइ ।
प्रथमी नदिमै हार पहरिया पहिरे दादुर नूपुर पाइ ॥ १९८ ॥

काजल गिरि धार रेख काजल करि कटि मेखला पयोधि कटि ।
मामोलौ बिन्दुलौ कुँकूमै प्रथिमी दीध निलाट पटि ॥ १९९ ॥

मिलियै तट ऊपटि त्रिथुरी पिलिया घण धर धाराधर घणी ।
केस जमण गंग कुसुम करम्बित वेणी किरि त्रिवेणी वणी ॥ २०० ॥

धर श्यामा सरिस स्यामतर जलधर घेॅंचे गलि बाहां घाति ।
श्रभि तिणि सन्ध्या वंदन भूला रिखिय न लखे सकै दिन राति॥२०१॥

रूठा पै लागि मनावि करे रस लाधी देह तणो गिणि लाभ ।
दम्पतिए आलिगन दीधा आलिंगन देखे धर आभ ॥ २०२ ॥

जलजाल श्रवति जल काजल ऊजल पीला हेक राता पहल ।
आधो फरै मेघ ऊधसता महाराज राजै महल ॥ २०३ ॥

करि ईंट नीलमणि कादो कुंदण थम्भ लाल पट पाँचि थिर।
मँदिरे गौख सु पदमरागमै सिखरि सिखि रमै मन्दिर सिर ॥ २०४॥

धरिया तनि वसत्र कुमकुमै धोया सैंधा प्रखोलित महल सुख।
भर श्रावणि भाद्रवि भोगविजै रुपमिणि वर एहवी रुख ॥ २०५॥

(शरद)

वरिखा रितु गई सरद रितु वलती वाखाणि सु वयणा वयणि।
नीखर धर जल रहिउ निवाणे निधुवनि लज्जा त्री नयणि ॥ २०६॥

पीलाणी धरा ऊखधी पाकी सरदि कालि एहवी सिरी।
कोकिल निसुर प्रसेद ओसकण सुरति अंति मुख जिम सुत्री ॥२०७॥

वितए आसोज मिले नभि वादल पृथी पंक जलि गुडलपण।
जिम सतगरु कलि कलुख तणा जण दीपति ग्यान प्रगटे दहण ॥२०८॥

गो खीर श्रवति रस धरा उदगिरति सर पोइणिए थई सुश्री।
वली सरद अगलोग वासिए पितरे ही मृत लोक प्री ॥ २०९॥

बोलन्ति मुहुरमुह विरह गमै बे तिसी सुकल निसि सरद तणी।
हँसणी ते न पासै देखै हँस हंस न देखै हंसणी ॥ २१०॥

ऊजले अदरसणि निसि उजुयाली घणूँ किसूँ वाखाण घणै।
सोलह कला समाइ गयौ ससि ऊजासहि आप आपणै ॥ २११॥

तुलि बैठौ तरणि तेज तम तुलिया भूप कणय तुलता भू भाति।
दिणि दिणि तिणि लघुता प्रामै दिन रानि राति तिणि गौरव राति॥२१२॥

दीधा मणि मँदिरे कातिग दीपक सुत्री समाणियाँ माहि सुख।
भीतर थका बाहिर इम भासै मनि लाजती सुहाग मुख ॥ २१३॥

छवि नवी नवी नव नवा महोछव मंडियै जिणि आणंद मई।
कातिग घरि घरि द्वारि कुमारी थिर चीत्रन्ति चित्राम थई॥ २१४॥

सेवन्ति नवै प्रति नवा सवे सुख जम चाँ मिसि वासी जगति।
रुषमिणि रमण तणा जु सरद रितु भुगति रासि निसि दिन भगति॥२१५॥

एहिज परि थई भीरि कजि आयाँ धनञ्जय अनै सुयोधन।
मासे मगसिर भलउ जु मिलियौ जागिया मींट जनारजन॥ २१६॥

फिरियौ पछि वाउ ऊतर फरहरियौ सहुए सूहव उर सरग।
भुयँग धनी प्रथमी पुड़ भेदे विवरे पैठा बे वरग॥ २१७॥

हुवइ घटि नदी हेम हेमालै विमल श्रृंग लागा वधण।
जोवनागमि कटि कुस थायै जिम थायै थूल नितम्ब थण॥ २१८॥

भजन्ति सुगृह हेमन्ति सीत भै मिलि निसि तु न कोई वहै मगि।
कोई कोमल वसत्रे कोई कम्बलि ।जण भारियौ रहन्ति जगि॥२१९॥

दिन जेही रिणी रिणाई दरसणि क्रमि क्रमि लागा संकुडिणि।
नीठि छुडै आकाश पोस निसि प्रौढ़ा करषणि पंगुरिणि॥ २२०॥

उलझाया तन मन आप आपमै विहत सीत रुषुमिणी वरि।
वाणि अरथ जिम सकति सकतिवँत पुहप गंध गुण गुणपरि॥२२१॥

मकरध्वज वाहणि चढयौ अहिमकर उत्तर वाउ वाए अउर।
कमल बालि विरहिणीवदन किय अम्ब पालि संजोगि उर॥ २२२॥

पारथिया कृपण वयण दिसि पवणै विण अम्बह बालिया वण।
लागै माघि /लोक प्रति लागौ जल दाहक सीतल जलण॥ २२३॥

निय नाम सीत जालै वण नीला जालै नलणी थकी जलि।
पातिग तिण द्वारिका न पैसे मँजियै विणु मन तणै मलि॥ २२४॥

प्रतिहरा प्रताप करें सी पाले दम्पति ऊपरि दसै दिसि।
अरक अगनि मिसि धूप आरती निय तणु वारै अहोनिसि ॥ २२५ ॥

(शिशिर)

रवि बैठौ कलसि थियौ पालट रितु ठरे जु डहकियौ हेम ठंठ।
ऊडण पख समारि रहे अलि कंठ समारि रहे कलकंठ ॥ २२६ ॥

वीणा डफ महुयरि वंस वजाए रोरी करि मुख पंचम राग।
तरुणी तरुण विरहि जण दुतरणि फागुण घरि घरि खेलै फाग॥२२७॥

अजहुँ तरु पुहप न पल्लव अंकुर थोड डाल गादरित थिया।
जिम सिणगार अकीधै सोहति प्री आगमि जाणियै प्रिया ॥ २२८ ॥

(वसन्त)

दस मास समापित गरभ दीध रित मन व्याकुल मधुकर मुणण्न्ति।
कठिए वेयणि कोकिल मिसि कूजति वनसपती प्रसवती वसन्ति॥२२९॥

पकवाने पाने फले सुपुहपे सुरँगे वसत्रे दरब स्रब।
पूजियै कसटि भँगि वनसपती प्रसूतिका होलिका प्रब ॥ २३० ॥

लागी दलि कलि मलयानिल लागै त्रिगुण परसतै षुधा त्रिस।
रटति पूत मिसि मधुप रूँखराइ मात श्रवति मधु दूध मिसि ॥२३१ ॥

वनि नयरि घराघरि तरि नरि सरवरि पुरुख नारि नासिका पथि।
वसन्त जनमियौ देण वधाई रमै वास चढि पवन रथि ॥ २३२ ॥

अनि अम्ब्र मौर तोरण अजु अम्बुज कली सु मंगल कलस करि।
वन्नरवाल बँधाणी वल्लो तरुवर एका बियै तरि ॥ २३३ ॥

फुट वानरेण कच नालिकेर फल मज्जा निकरि दधि मँगलिक।
कुंकुम अखित पराग किंजलक प्रमुदित अति गायन्ति पिक ॥ २३४ ॥

आयौ इलि वसँत वधावण आई पोइणि पत्र जल एणि परि ।
आणंद वणे काचमै अङ्गणि भामिणि मोतिए थाल भरि ॥ २३५ ॥

कामा वरखन्ती कामदुधा क्रिरि पुत्रवती थी मन प्रसन ।
पुहप करणि करि केसू पहिरे वनसपती पीला वसन ॥ २३६ ॥

कणियर तरु करणि सेवंती कूजा जाती सोवन गुलाल जत्र ।
क्रिरि परिवार सकल पहिरायौ वरणि ईए वसत्र ॥ २३७ ॥

विधि एणि वधावे वसत वधाए भालिम दिन दिन चढ़ि भरण ।
हुलरावणे फाग हुलरायौ तरु गहवरिया थिय तरुण ॥ २३८ ॥

मंत्री तहाँ मयण वसँत महीपति सिला सिँघासण धर सधर ।
माथै अम्ब छत्र मंड़ाणा चलि वाइ मंजरि ढलि चमर ॥ २३९ ॥

दाड़िमी बीज विसतरिया दीसै निउँछावरि नाँखिया नग ।
चरणे लुंचित खग फल चुम्बित मधु मुंचंति सीचन्ति मग ॥२४०॥

राजति अति एण पदाति कुंज रथ हँस माल बन्धि लास हय ।
ढालि खजूरि पूठि ढलकावै गिरिवर सिणगारिया गय ॥ २४१ ॥

तरु ताल पत्र ऊँचा तड़ि तरला सरला पसरन्ता सरगि ।
बैठै पाटि वसन्त बन्धिया जगहथ क्रिरि ऊपरी जगि ॥ २४२ ॥

आगलि रितुराय मंडियौ अवसर मण्डप वन नीझरण मृदग ।
पंचबाण नायक गायक पिक वसुह रंग मेलगर विहंग ॥ २४३ ॥

कलहंस जाणगर मोर निरतकर पवन तालधर ताल पत्र ।
आरि तन्तिसर भमर उपंगी तीवट उघट चकोर तत्र ॥ २४४ ॥

विधि पाठक सुक सारस रस वंछक कोविद खंजरीट गतिकार ।
प्रगलभ लाग दाट पारेवा विदुर वेस चक्रवाक विहार ॥ २४५ ॥

आंगणि जल तिरप उरप अलि पि अति मरुत चक्र किरि लियत मरू ।
रामसरी खुमरी लागी रट धूया माठा चन्द धरू ॥ २४६ ॥

निगरभर तरुवर सघण छाँह निसि पुहपित अति दीपगर पलास ।
मौरित अम्ब रीझ रोमंचित हरखि विकास कमल कृत हास ॥२४७॥

प्रगटै मधु कोक सँगीत प्रगटिया सिसिर जवनिका दूरि सिरि ।
निज मंत्र पढे पात्र रितु नाँखी पहुपंजलि वणराय परि ॥ २४८ ॥

प्रज उद्‌भिज सिसिर दुरीस पीड़तौ ऊतर ऊथापिया असन्त ।
प्रसन वायु मिसि न्याय प्रवर्त्त्यौ वनि वनि नयरे राज वसन्त ॥२४९॥

पुहपाँ मिसि एक एक मिसि पाताँ खाडिया द्रब मांडिया ऊखेलि ।
दीपक चम्पक लाखे दीधा कोड़ि धजा फहराणी केलि ॥ २५० ॥

मलयानिल वाजि सुराज थिया महि भई निसङ्कित अङ्क भरि ।
वेली गलि तरुवराँ विलागी पुहप भार ग्रहणां पहरि ॥ २५१ ॥

पीड़न्ति हेमन्त सिसिर रितु पहिलौ दुख टाल्यौ वसन्त हितदाखि ।
व्याए वेली तणी तरुवराँ साखाँ विसतरियाँ वैसाखि ॥ २५२ ॥

दीजै तिहाँ डंक न दँड न दीजै ग्रहणि मवरि तरु गानगर ।
करग्राही परवरिया मधुकर कुसुम गंध मकरन्द कर ॥ २५३ ॥

भरिया तरु पुहप वहे छूटा भर काम बाण ग्रहिया करगि ।
वलि रितुराइ पसाइ वेसन्नर जण भुरड़ीतौ रहै जगि ॥ २५४ ॥

वरखा जिम वरखत चातक वंचित वंचि न को तिम राज वसन्त ।
फुल्ल पंख कृत सेव लबध फल बँदि कोलाहल खग बोलन्त ॥ २५५ ॥

कुसुमित कुसुमायुध ओटि केलि कृत तिहि देखे थिउ खीण तन ।
कन्त सँजोगणि किंसुख कहिया विरहणि कहे पलास वन ॥ २५६ ॥

तसु रंग वास तसु बास रंग तण कर पल्लव कोमल़ कुसुम।
वणि वणि मालिणि केसरि वीणति भूली नख प्रतिबिम्ब भ्रम॥ २५७॥

सबल़ जल़ सभिन्न सुगंध भेट सजि डिगमिगि पाउ वाउ क्रोध डर।
हालियौ मल़याचल़ हूँत हिमाचल कामदूत हर प्रसन कर॥ २५८॥

तरतौ नदि नदि ऊतरतौ तरि तरि वेलि वेलि गलि़ गल़ै विलग्ग।
दखिण हूँत आवतौ उतर दिसि पवन तणा वहै न पग्ग॥ २५९॥

केवड़ा कुसुमकुन्द तणा केतकी श्रम सीकर निरझर श्रवति।
ग्रहियौ कन्धे गंध भारगुरु गंधवाह तिणि मन्द गति॥ २६०॥

लीयै तसु अंग वास रस लोभी रेवा जलि़ कृत सौच रति।
दखिणानिल़ आवतौ उतर दिसि सापराध पति जिम सरति॥ २६१॥

पुहपवती लता न परस पमँके देतौ अंग आलिंगन दान।
मतवाल़ौ पय ठाइ न मंडै पवन वमन करतौ मधुपान॥ २६२॥

तोय झरणि छंटि ऊधसत मल़य तरि अति पराग रज धूसर अंग।
मधु मद श्रवति मंद गति मल्हपति मदोनमत्त मारुत मातङ्ग॥ २६३॥

गुण गन्ध ग्रहित गिलि़ गरल़ ऊमलि़त पवण वाद ए उभय पख।
स्रीखँड सैल़ सँयोग संयोगिणि भणि विरहिणी भुयङ्ग भख॥ २६४॥

रितु किहि दिवस सरस राति किहि सरस किहि रस संध्या सुकवि कहन्ति।
बे पख सूधति बिहूँ मास बे वसन्त ताइ सारिखौ वहन्ति॥ २६५॥

निमिखि पल़ वसन्ति सारिखौ अहोनिसि एकण एक न दाखै अन्त।
कन्त गुणे वसि थायै कन्ता कान्ता गुणि वसि थायै कन्त॥ २६६॥

गृह पुहप तणौ तिणि पुहपित ग्रहणौ पुहप ई ओढ़ण पाथरणि।
हरखि हिंडोल़ि पुहपमै हिण्डति सहि सहचरि पुहपाँ सरणि॥ २६७॥

पौढाड़ै नाद वेद परबोधै निसि दिनि वाग विहार नितु ।
माणग मयण एण विधि माणै रुषमिणि कन्त वसन्त रितु ॥ २६८ ॥

अवसरि तिणि प्रीति पसरि मन अवसरि हाइ भाइ मोहिया हरि ।
अंग अनंग गया आपाणा जुड़िया जिणि वसिया जठरि ॥ २६९ ॥

वसुदेव पिता सुत थिया वासुदे प्रदुमन सुत पित जगतपति ।
सासू देवकी रामा सुवहू रामा सासू वहू रति ॥ २७० ॥

लीलाधरण ग्रहे मानुखी लीला जगवासग वसिया जगति ।
पित प्रदुमन जगदीश पितामह पोतौ अनिरुध ऊखापति ॥ २७१ ॥

किं कहिसु तासु जसु अहि थाकौ कहि नारायण निरगुण निरलेप ।
कहि रुषमिणि प्रदुमन अनिरुध का सह सहचरिए नाम सँखेन ॥ २७२ ॥

लोकमाता सिंधुसुता श्री लिखमी पदमा पदमालया प्रमा ।
अवर गृहे अस्थिरा इन्दिरा रामा हरिवल्लभा रमा ॥ २७३ ॥

दपरक कंदरप काम कुसुमायुध सम्बरारि रति पति तनुसार ।
समर मनोज अनंग पंचसर मनमथ मदन मकरध्वज मार ॥ २७४ ॥

चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक विग्य चतुर जुग विधायक ।
सर्वजीव विश्वकृत ब्रह्मसू नरवर हँस देहनायक ॥ २७५ ॥

सुन्दरता लज्जा प्रीति सरसती माया कान्ती क्रिपा मति ।
सिद्धि वृद्धि सुचिता रुचि सरधा मरजादा कीरति महति ॥ २७६ ॥

संसार सुपहु करता गृह संगृह गिणि तिणि हीज पंचमी गालि ।
मदिरा रीस हिंसा निन्दा मांत च्यारे करि मूँकिया चंडालि ॥ २७७ ॥

हरि समरण रस समझण हरिणाखी चात्रण खल खगि खेत्र चढ़ि ।
वैसे सभा पारकी बोलण प्राणी वंछइ त वेलि पढ़ि ॥ २७८ ॥

सरसती कंठि श्री गृहि मुखि सोभा भावी मुगति तिकरि भुगति।
उर्वरि ग्यान हरि भगति आतमा जपै वेलि त्यां ए जुगति ॥ २७९ ॥

महि सुइ खट मास प्रात जल मंजै आप अपरस अरु जित इन्द्री।
प्रागै वेलि पढ़न्ताँ नित प्रति त्री वंछित वर वछित त्री ॥ २८० ॥

ऊपजै अहोनिसि आप आप मै रुषमणि क्रिसन सरीख रति।
कहै वेलि वर लहै कुमारी परणी पूत सुहाग पति ॥ २८१ ॥

परिवार पूत पोत्रे पड़पोत्रे अरु साहण भंडार इम।
जण रूपमिणि हरि वेलि जपंताँ जग पुड़ि वाधै वेलि जिम ॥ २८२ ॥

पेखे काइ कहति एक एक प्रति विमल मंगल गृह एक वगि।
एणि कवण सुभ क्रम आचरताँ जाणियै वेलि जपन्ति जगि ॥ २८३ ॥

चतुरविध वेद प्रणीत चिकित्सा ससत्र उखध मँत्र तँत्र सुवि।
काया कजि उपचार करन्ताँ हुवै सु वेलि जपन्ति हुवि ॥ २८४ ॥

आधिभूतक आधिदेव अध्यातम पिंड प्रभवति कफ वात पित।
त्रिविध ताप तसु रोग त्रिविध मै न भवति वेलि जपन्त नित ॥ २८५ ॥

मन सुद्धि जपन्ताँ रुषमिणि मंगल निधि सम्पति थाइ कुसल नित।
दुरदिन दुरग्रह दुसह दुरदसा नासै दुसुपन दुर निमित ॥ २८६ ॥

मणि मंत्र तंत्र बल जंत्र अमंगल थलि जलि नभसि न कोइ छलन्ति।
डाकिणि शाकिणि भूत प्रेत डर भाजै उपद्रव वेलि भणन्ति ॥ २८७ ॥

सन्यासिए जोगिए तपसि तापसिए काँइ इवड़ा हठ निग्रह किया।
प्राणी भवसागर वेलि पढ़न्तां थिया पार तरि पारि थिया ॥ २८८ ॥

किं जोग जाग जप तप तीरथ किं व्रत किं दानाश्रम वरणा।
मुख कहि क्रुसन रुषमिणि मंगल काँइ रे मन कलपसि क्रपणा ॥२८९॥

बे हरि हर भजै अतारू बोलै ते अब भागीरथी म तूँ ।
एक देस वाहणो न आणाँ सुरसरि सम सरि वेलि सूँ ।। २९० ।।

वल्ली तसु बीज भागवत वायौ महि थाणौ प्रिथु दास मुख ।
मूल ताल जड़ अरथ मण्डहे सुथिर करणि चढ़ि छाँह सुख ।। २९१ ।।

पत्र अक्खर दल द्वाला जस परिमल नव रस तन्तु त्रिधि अहोनिसि ।
मधुकर रसिक सु भगति मंजरी मुगति फूल फल भुगति मिसि ।। २९२ ।।

कलि कल्प वेलि वलि कामधेनुका चिन्तामणि सोमवल्लि चत्र ।
प्रकटित पृथिमी पृथु मुख पंकज अखरावलि मिसि थाइ एकत्र ।। २९३ ।।

प्रिथु वेलि कि पँचविध प्रसिध प्रणाली आगम नीगम कजि अखिल ।
मुगति तणी नीसरणी मंड़ी सरग लोक सोपान इल ।। २९४ ।।

मोतिए विसाहण ग्रहि कुण मूँकै एक एक प्रति एक अनूप ।
किलसोभण मुखमूभ वयणकण सुकवि कुकवि चालणी न सूप ।।२९५।।

पिंडि नख सिख लगि ग्रहणे पहिरिए महि मूँ वाणो वेलि मई ।
जग गलि लागी रहै असै जिमि सहै न दूखण जेम सई ।। २९६ ।।

भाषा संस्कृत प्राकृत भणंता मूभ भारती ए मरम ।
रस द्वयिनी सुन्दरी रमताँ सेज अन्तरिख भूमि सम ।। २९७ ।।

विवरण जौ वेलि रसिक रस वंछौ कवि करणि तौ मूभ कथ ।
पूरे इते प्रामिस्यौ पूरौ इओ ओछे ओछौ अरथ ।। २९८ ।।

ज्योतिषी वैद पौराणिक जोगी संगीती तारकिक सहि ।
चारण भाट सुकवि भाखा चित्र करि एकठा तो अरथ कहि ।। २९९ ।।

ग्रहिया मुखि मुखा गिलित ऊग्रहिया मूँ गिणि आखर ए मरम ।
मोटां तणौ प्रसाद कहै महि ऐठौ आतम सम अधम ।। ३०० ।।

हरि जस रस साहस करे हालिया मो पंडिता वीनती मोख।
अम्हीणा तम्हीणे आया श्रवण तीरथे वयण सदोख ॥ ३०१ ॥

रमताँ जगदीसर तणौ रहसि रस मिथ्या वयण न तासु मद्दे।
सरसै रुषमणि तणी सहचरी कहिया मूँ मैं तेम कहे ॥ ३०२ ॥

तूँ तणा अनै तूँ तणी तणा त्री केसव कहि कुण सकै क्रम।
भलौ ताइ परसाद भारती भूँडो ताइ माहरौ भ्रम ॥ ३०३ ॥

रूप लखण गुण तणा रुषमिणी कहिवा सामरथीक कुण।
जाइ जाणिया तिसा मैं जम्पिया गोविंद राणी तणा गुण ॥ ३०४ ॥

वरसि अचल गुण अंग ससी संवति तवियौ जस करि श्री भरतार।
करि श्रवणे दिन रात कंठ करि पामै स्रो फल भगति अपार ॥ ३०५ ॥

॥ इति शुभम् ॥